International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(6): 155-157

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(6): 155-157
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 11-09-2022
Accepted: 17-10-2022

तानिया डसगोत्रा
शोधच्छात्रा पी. एच. डी., संस्कृत विभाग, जम्मूविश्वविद्यालय, जम्मू, जम्मू और कश्मीर, भारत

Corresponding Author:
तानिया डसगोत्रा
शोधच्छात्रा पी. एच. डी., संस्कृत विभाग, जम्मूविश्वविद्यालय, जम्मू, जम्मू और कश्मीर, भारत

आचार्य मम्मट एवं श्री हर्ष के बीच मातुलीय सम्बन्ध का प्रस्फुटन एवं निरसन एक विश्लेषण

तानिया डसगोत्रा

सारांश
अनेक विद्वान आचार्य मम्मट और श्रीहर्ष के बीच मातुलीय सम्बन्ध को प्रतिष्ठित करते हैं। क्योंकि एक जनश्रुति के अनुसार आचार्य मम्मट श्रीहर्ष के मामा थे। इस बात को अनेक तर्कों के द्वारा इस शोध पत्र में स्पष्ट किया गया है कि इनके बीच मातुलीय सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सकता,क्योंकि इनके बीच लगभग 150 वर्ष का अन्तराल है।

कूटशब्द : मातुलीय सम्बन्ध, आचार्य मम्मट, श्री हर्ष, प्रस्फुटन एवं निरसन

प्रस्तावना
आचार्य मम्मट संस्कृत काव्यशास्त्र के सर्वश्रेष्ठ विद्वानों में से एक हैं वे अपने ग्रन्थ काव्यप्रकाश के कारण अत्यन्त प्रसिद्ध है जो दस उल्लासों मे विभक्त है। इनके नाम से यह ज्ञात होता है कि वह कश्मीरी थे। उस समय कश्मीर साहित्य और विद्या का केन्द्र था। एक अनुश्रुति के अनुसार आचार्य मम्मट नैषधीयचरित के रचयिता श्री हर्ष के मामा थे। श्री हर्ष के स्थिति काल के विषय में विद्वानों में मतभेद दिखाई देता है। श्री हर्ष ने अपने विषय में नैषधीयचरितम के सर्गान्त श्लोकों में यह बताया है कि उनके पिता श्री हीर और माता मामल्ल देवी है। [1]
लेकिन उन्होने अपने सम्बन्ध में इस बात का उल्लेख नहीं किया है कि उनका जन्म किस समय और कहां पर हुआ ? श्री हर्ष ने अपने ग्रन्थ नैषधीयचरित में न्यायसूत्रकार अक्षपाद गौतम के उपहास का आख्यान किया है.

मुक्तये यः शिलात्वाय शास्त्रमूचे सचेतसाम।
गौतमं तमवेक्ष्यैव यथा वित्थ तथैव सः।। [2]

विद्वानों द्वारा गौतम का समय ई पू चतुर्थ शताब्दी माना गया है। [3] अतः श्री हर्ष चतुर्थ शताब्दी के बाद के ही रहे होंगे। सबसे पहले प्रो बूहलर ने राजशेखर सुरि के प्रबन्धकोश के आधार पर श्री हर्ष के समय को निर्धारित करने का प्रयत्न किया है। राजशेखर ने श्री हर्ष को राजा जयचन्द्र का आश्रय कवि मानते हुए यह बताया है कि श्री हर्ष के पिता को किसी राजकीय पंडित ने हराया था। [4]
एक जनश्रुति के अनुसार श्री हर्ष को अपने नैषधीयचरित की स्वीकार्यता का प्रमाण पत्र लेने कश्मीर जाना पडा था। किन्तु विद्वानों की नगरी काशी में रहने वाले श्री हर्ष को अपने ग्रन्थ की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए कश्मीर जाना अत्युक्ति लगता है। यह संभव हो सकता है कि श्री हर्ष ने जिस प्रकार अपने महाकाव्य की रचना की वह काशी के विद्वानों को ग्राह्य न हो क्योंकि उनका पाण्डित्य बहुत प्रबल था ऐसा प्रतीत होता है कि श्री हर्ष ने अभिनवगुप्त के नियमों का पालन कर नैषधीयचरित की रचना की जिससे यह सिद्ध होता है कि श्री हर्ष अभिनवगुप्त के परवर्ती हैं। अभिनवगुप्त का समय पी वी काणे ने 980–1020 ई तक माना है। [5] अतः 10 वीं शताब्दी उत्तरार्ध के पूर्व श्री हर्ष का समय स्वीकार नहीं किया जा सकता। श्री हर्ष ने अपने खण्डन्खण्डखाद्य ग्रन्थ में व्यक्तिविवेक [6] एवं व्यक्तिविवेक के प्रवर्तक महिमभट्ट [7] दोनों का वर्णन किया है। महिमभट्ट का वर्णन करते हुए श्री हर्ष ने उनके व्यक्तिविवेक को कविलोकलोचन की संज्ञा इसलिए दी है क्योंकि आनन्दवर्धनादि के ध्वनि सिद्धान्त की समीक्षा में व्यक्तिविवेक को उत्तम स्थान प्राप्त है तथा इसके रचयिता काव्यालोचकों में अत्यन्त प्रसिद्ध थे। महिमभट्ट ने व्यक्तिविवेक में अभिनवगुप्त का नाम उल्लेख किया है जिससे यह ज्ञात होता है कि महिमभट्ट अभिनवगुप्त के परवर्ती कवि है [8] इसी कारण महिमभट्ट का समय 1020ई से

परवर्ती सिद्ध होता है। जिससे हम यह कह सकते हैं कि इनका समय 1100ई तक माना जा सकता है। श्री हर्ष ने अपने ग्रन्थ नैषधीयचरित के दसवें सर्ग में बौद्ध दर्शन के तीन सम्प्रदायों माध्यमिकों के शून्यवादए योगाचार के विज्ञानवाद तथा सोत्रान्तिकों के साकारवाद की सिद्धि का वर्णन किया है [9] जो कि 11वीं शताब्दी के अद्वयवज्र [10] से प्रभावित दिखता है। स्पष्टतया श्रीहर्ष का समय 11वी शताब्दी का ही प्रमाणित होता है।

एक किंवदंति के अनुसार कश्मीरी विद्वान आचार्य मम्मट श्रीहर्ष के मामा थे। मम्मट कृत काव्यप्रकाश के सप्तम उल्लास में दोष निरूपण प्रसंग में जब आचार्य मम्मट श्रीहर्ष रचित नैषधीयचरित का प्रसंग रखते हुए कहते है कि यदि तुम मुझे यह ग्रन्थ पहले दिखाते तो दोष विवेचन के लिए मुझे अन्य ग्रन्थों की तरफ नहीं देखना पडता। [11] अतः स्पष्ट होता है कि आचार्य मम्मट के शब्दों में नैषधीयचरित दोष सहित ग्रन्थ है। मम्मट ने नैषधीयचरित में दोष ही दोष देखा तथा श्रीहर्ष के कहने पर कि मेरे ग्रन्थ में दोष दिखाईए तो उन्होने उदाहरण स्वरूप नैषध का एक श्लोक बताया–

तव वर्मनि वर्ततां शिवं पुनरस्तु त्वरितं समागमः।
अयि साधय साधयेप्सितं स्मरणीयाः समये वयं वयः।। [12]

इस श्लोक को मम्मट ने इस रूप में रखा है–

तव वर्त्म निवर्ततां शिवं पुनरस्तु त्वरितं सा माऽऽगमः।
अयि साधयसाधयेप्सितं समये वयं वयः।।

वह कहते हैं कि ऐसा होने पर श्रीहर्ष के माध्यम से किये गये अर्थ का अनर्थ ही हो जाएगा। दूसरी और कहां मम्मट का समय 1050ई और कहां श्रीहर्ष का 12वीं शताब्दी? इस प्रकार मम्मट और श्रीहर्ष के बीच सम्बन्ध प्रतिष्ठित करना केवल कल्पना मात्र ही है। यह संभव हो सकता है कि कश्मीरी विद्वान ने श्रीहर्ष कौ प्रतिभा से अशंकित होकर श्रीहर्ष के ग्रन्थ में दोष देखे हो जो कि उनके विद्वत्वदोष का परिणाम हो सकता है इसके अलावा और कुछ नहीं। डॉ सुशील कुमार डे भी इस विषय को आश्चर्यजनक ही मानते है। [13] श्रीहर्ष को कश्मीर का निवासी मानने वाले विद्वानों ने अनेक तर्क दिए हैं। माता के नाम से इन्हे कश्मीर का निवासी कहा गया है। क्योंकि श्रीहर्ष की माता का नाम मामल्ल देवी था और यह नाम कश्मीर से ही संबंध रखता है। [14] इसी कारण श्रीहर्ष कश्मीर के रहने वाले रहे होंगे। एक किंवदंति के अनुसार श्रीहर्ष का सम्बन्ध काव्यप्रकाश के रचयिता मम्मट से था वह उनकी भगिनी का पुत्र था इससे हमे उनके मातुलीय सम्बन्ध का प्रस्फुटन देखने को मिलता है। श्रीहर्ष ने नैषधीयचरित में यह वर्णन किया है कि चौदह विद्याओं को जानने वाले विद्वानों में उन्हे सम्मान दिया गया। [15] यह सम्मान उन्हें उनके स्वदेश प्रेम के कारण ही दिया गया होगा। इन सब बातों से यह स्पष्ट होता है कि श्रीहर्ष कश्मीर के ही रहने वाले थे।

अनेक विद्वान इनके कश्मीरी होने के तर्कों का निराकरण करते हुए कहते हैं कि श्रीहर्ष की माता को नाम से कश्मीर से संबद्ध करना विद्वानों कि भ्रान्ति का परिचय देता है। क्योंकि ऐसे नाम दक्षिण भारत आन्ध्रप्रदेश एवं तमिलनाडु जैसे राज्यों में भी देखने को मिलते हैं। अतः यह हो सकता है कि श्रीहर्ष के पिता दक्षिण भारत की यात्रा पर गये हों वहीं इनका परिचय मामल्लदेवी से हो गया हो या काशी में उनकी मुलाकात हो गई हो और दोनों एक सूत्र में बंध गये हों।

कुछ विद्वत जन जो श्रीहर्ष का सम्बन्ध आचार्य मम्मट से प्रतिष्ठित करते हुए श्रीहर्ष की मम्मट से मुलाकात एवं नैषधीयचरित में दोष देखकर मम्मट का यह कहना कि ''यदि तुम इस ग्रन्थ को मेरी रचना काव्यप्रकाश से पहले दिखाते तो मुझे दोष विवेचन के लिए अन्य ग्रन्थों कि आवश्यकता नही पडती'' इसी तथ्य के आधार पर श्रीहर्ष को कश्मीर का निवासी मानते हैं। [16] उन्होने ऐतिहासिक तिथियों की अवहेलना ही की है। विचारणीय है कि आचार्य मम्मट का समय 1050ई है जबकि श्रीहर्ष का ;1114ई 1200ईद्ध बारहवीं शताब्दी। इसलिए श्रीहर्ष का कश्मीरी होना किसी भी प्रकार से संभव नहीं हो सकता क्योंकि इनमें लगभग 150 वर्ष का अन्तर प्राप्त होता है। इस प्रकार कुछ कश्मीरी विद्वानों से सम्मानित होने के कारण हम श्रीहर्ष को कश्मीरी नहीं कह सकते। यह संभावना हो सकती है कि विद्वानों ने श्रीहर्ष की प्रतिभा को सम्मानित करने के उद्देश्य से ही उसे आदर का पात्र बनाया होगा।

इसके पश्चात की जानकारी जैनविद्वान् राजशेखर के ग्रन्थ प्रबन्धकोश में दखने को मिलती है। जिसमें यह वर्णन प्राप्त होता है कि श्रीहर्ष के पिता काशी नरेश जयचन्द्र की सभा के सम्मानित विद्वान थे। काशी में उदयनाचार्य से शास्त्रार्थ में पराजित होने पर उन्होने अपने पुत्र श्रीहर्ष से कहा कि यदि तुम मेरे वास्तविक पुत्र होगे तो मेरे अनादर का प्रतिशोध उस व्यक्ति को शास्त्रार्थ में पराजित करके लोगे। इसके बाद उनका स्वर्गवास हो गया। [17] इसके अनन्तर श्रीहर्ष की मां मामल्लदेवी ने गुरू बनकर अपने पुत्र को चिन्तामणि मंत्र [18] का जप करने की शिक्षा दी। इसके पश्चात् उन्होने गंगा नदी के किनारे चिन्तामणि मंत्र की आराधना की। जिससे प्रसन्न होकर त्रिपुरा देवी ने इन्हें सम्पूर्ण विद्वान बनने का आशीष दिया। तत्पश्चात् उन्होंने तर्कशास्त्रए व्याकरणए ज्योतिष आदि का ज्ञान प्राप्त कर लेखन कार्य आरम्भ किया। इनकी भाषा इतनी कठिन थी कि विद्वान भी इनके लेखन एवं भाषण को समझ नहीं पाते थे। तदनन्तर जब श्रीहर्ष जयचन्द्र की सभा में उपस्थित हुए तो तब उन्होने राजा के गुणों से प्रसन्न होकर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा–

गोविन्दनन्दनतया च वपुः श्रिया व माऽस्मिन्नृपे कुरूत कामधियं तरूण्यः।
अस्त्रीकरोति जगतां विषये स्मरः स्त्रीरस्त्री जनः पुनरनेन विधीयते स्त्रीः।। [19]

ऐसा सार्थक गूढार्थक व्याख्यान को सुनकर राजा तथा सभी सभासद प्रसन्न हुए। सभा में उपस्थित नैषधकार के पिता को हराने वाले उदयनाचार्य पर कटाक्ष करते हुए कहे–

साहित्ये सुकुमारवस्तुनि दृढन्यायग्रहग्रन्थिले ।
तर्के वा मयि संविधातरीसमं लीलायते भरती।
शय्या वाऽस्तु मृदूतरच्छदवती दर्भाङ्कुरैरास्तृता
भूमिर्वा हृदयंगमो यदि पतिस्तुल्या रतिर्योषिताम्।। [20]

तत्पश्चात् इन दोनों विद्वानों की प्रशंसा करते हुए जयचन्द्र ने दोनों का सत्कार किया। तथा श्रीहर्ष ने जयचन्द्र की सभा का सदस्य होना स्वीकार कर लिया। राजा जयचन्द्र के कहने पर श्रीहर्ष ने नैषधीयचरित का निर्माण किया। जिसे देखकर जयचन्द्र ने कहा कि इस ग्रन्थ को कश्मीर के शारदापीठ में सरस्वती के हाथों में रख देना। यदि ग्रन्थ दोषों से रहित होगा तो वह शिरकम्पन कर अभिवादन करती है और यदि दोष सहित होगा तो वह उसे कूडे के समान फेंक देती है।इसी प्रकार सरस्वती द्वारा स्वीकार्य ग्रन्थ का प्रमाण पत्र वहां के राजा से ले आईए। श्रीहर्ष ने कश्मीर पहुंच कर सरस्वती के हाथों में नैषधीयचरित को रखा किन्तु देवी ने उसे दूर फेंक दिया। यह देखकर श्रीहर्ष ने कहा कि आप मेरे ग्रन्थ को सामान्य ग्रन्थ न मानें। यह सुनकर सरस्वती ने प्रत्युत्तर में कहा कि तुमने ग्रन्थ में मुझे विष्णु की पत्नी कहा है जिससे मेरे कन्यात्व का हरण हुआ है। [21] इसी दोष के कारण मैनें तुम्हारे ग्रन्थ को स्वीकार नहीं किया क्योंकि अनलएधूर्तएरोगएमृत्यु और मर्मभाषण कर्त्ता ये पॉच तो योगीयों को भी व्याकुल कर देते है–

पावको वञ्चको व्याधि पंचत्त्वां मर्मभाषकः।
योगिनामप्यमी पंच प्रायेणोद्देकहेवः।। [22]

इसका उत्तर देते हुए नैषधकार श्रीहर्ष ने सरस्वती से कहा कि क्या आपने एक अवतार में भगवान विष्णु को पति के रूप में नही अपनाया था? क्या आपको इस लोक में विष्णुप्रिया के नाम से नहीं पुकारा जाता ? क्या आपका मुझ पर क्रोध करना व्यर्थ नहीं है ? जिसके कारण आप मेरी रचना की अवहेलना कर रहीं है। यह सब सुनकर देवी सरस्वती ने नैषधीयचरित को उठाया और सब विद्वतजनों के समक्ष स्वीकार कर उसका अभिवादन किया। इससे स्पष्ट होता है कि श्रीहर्ष ने नैषधीयचरितम् की निर्दोषता का प्रमाण पत्र कश्मीर निवासिनी शारदापीठाधीश्वर से प्राप्त किया। जैसा की राजशेखर रचित काव्यमीमांसा में विवृत है।

जैन विद्वान राजशेखरसूरि कृत प्रबन्धकोश के मतानुसार नैषधकार श्रीहर्ष के आश्रयदाता राजा जयचन्द्र थे एवं नैषधीयचरित की प्रामाणिकता का प्रमाणपत्र श्रीहर्ष को कश्मीर नरेश माधवदेव से प्राप्त हुआ था। [23] राजशेखर ने अपने ग्रन्थ प्रबन्धकोश में यह बताया है कि राजा जयचन्द्र के मन्त्री ने 1174ई में सोमनाथ की यात्रा की थी एवं इससे पहले श्रीहर्ष अपनी रचना नैषधीयचरित की प्रमाणिकता के लिए कश्मीर गये थे। जिससे यह स्पष्ट होता है कि 1174ई के पहले ही श्रीहर्ष ने नैषधीयचरित का निर्माण कर लिया था। इसके साथ ही प्रो. एस. पी. भट्टाचार्य ने 1125ई से 1180ई के बीच ही श्रीहर्ष के साहित्यिक जीवन को माना है। [24]

अतः आचार्य मम्मट और श्रीहर्ष के बीच कोई सम्बन्ध सिद्ध नहीं होता है क्योंकि इनके बीच 150 वर्ष का अन्तराल पडता है इस आधार पर हम कह सकते हैं कि आचार्य मम्मट और श्रीहर्ष के बीच मातुलीय सम्बन्ध स्थापित करना उचित नहीं है।

सन्दर्भ

1 श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालंकारहीरः सुतं
श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रिय चयं मामल्लदेवि च यम्।
तच्चिन्तामणिमंत्र चिन्तनफले श्रृंगारभंगया महा.
काव्ये चारूणि नैषधीयचरिते सर्गोऽयमादिर्गतः नैषधीयचरितम् 1/145

2 नैषधीयचरितम्. 17/75।

3 भारतीय दर्शन. आचार्य बलदेव उपाध्यायएपृ. 171 ।

4 प्रबन्धकोशए राजशेखर सूरिए पृ. 54।

5 History of Sanskrit poetics.- Dr. P.V Kane, p. 232.

6 खण्डनखण्डखाद्यए पृ. 723।

7 दोषं व्यक्तिविवेकेऽमुं कविलोकविलोचने।
काव्यमीमांसिषु प्राप्तमहिमा महिमाऽऽदृत।। खण्डनखण्डखाद्यए पृ. 783 ।

8 ध्वन्यालोकलोचनए पृ..33 पृ..19 में उद्धृत एवं व्यक्तिविवेकए पृ. 19 ।

9 या सोमसिद्धान्तमयाननेव शून्यात्मतावादमयोदरेव।
विज्ञानसामस्त्यमयान्तरेव साकारतासिद्धिमयाखिलेव।। नै. 11/88

10 द्रष्टव्य.साधनमालाए द्वितीय भागए भूमिकाए पृ. 6 गायकवाड ओरियन्टल सिरीज।

11 Kashmir report (extra no. of JBBRAS.1877) p. 68 Recorded by dr.Buhler.

12 नैषध. 2/62 ।

13 H.S.L.P. 325, N-4 = S.K. Day.

14 श्रीनीलकमलभट्टाचार्य ''नैषध और श्रीहर्ष''– सरस्वती भवन स्टडीजए पृ. 170.194 ।

15 कश्मीरैर्महिते चतुर्दशजयी विद्यां विदभिर्महा ।
काव्ये तद्भुवि नैषधीयचरिते सर्गोऽगमत्षोडशः।। नै. 16/31 उत्तरार्ध।

16 Kashmir report- Recorded by Bulhar. And see alsp article entitled Naisadhacharita- auchitacara by Shivkamesvara Rao, in Mimansa,1-5 (Tenali, 1922) and History of Sanskrit sahitya, Banaras, 131:68.

17 प्रबन्धकोश पृ. 54।

18 अवामावामार्द्धे सकलमुभयाकाघटनाद् द्विधाभूतं रूपं भगवदभिधेयं भवति यत् ।
तदन्तर्मन्त्रम मे स्मरहरमयं सेन्दुममलं निराकारं शाश्र्वज्जप नरपते सिध्यतु सते।।नै. 14/85

19 राजशेखर सूरिकृत प्रबन्धकोशान्तर्गतः श्रीहर्ष कविप्रबन्धः श्लोक 1 ।

20 श्रीहर्ष कविप्रबन्धः श्लोक 2 ।

21 देवी पवित्रितचतुर्थभुजवामभागा वागालपत्पुनरिमां गरिमाभिरामाम्।
एतस्य निष्कृप कृपाणसनाथपाणेः पाणिग्रहादनुगृहाण गणं गुणानां।। नै. 11/66 श्रीहर्ष
कवि प्रबन्ध कोष श्लोक 4

22 श्रीहर्ष कविप्रबन्धः श्लोक 5।

23 श्रीहर्षेण पण्डिता उक्तास्तत्रत्या ग्रन्थमत्रत्याय शते माधवदेवनाम्ने दर्शयत्। श्रीजयन्तचन्द्राय चं
शुद्धोऽयं इति लेखे प्रदत्त इति। प्रबन्धकोश पेज.56।

24 The proable date of the Naishadhacharita- Prof. S.P. Battacharya, Oriental thought, vol.,no. 4, July 1955, p. 58-73